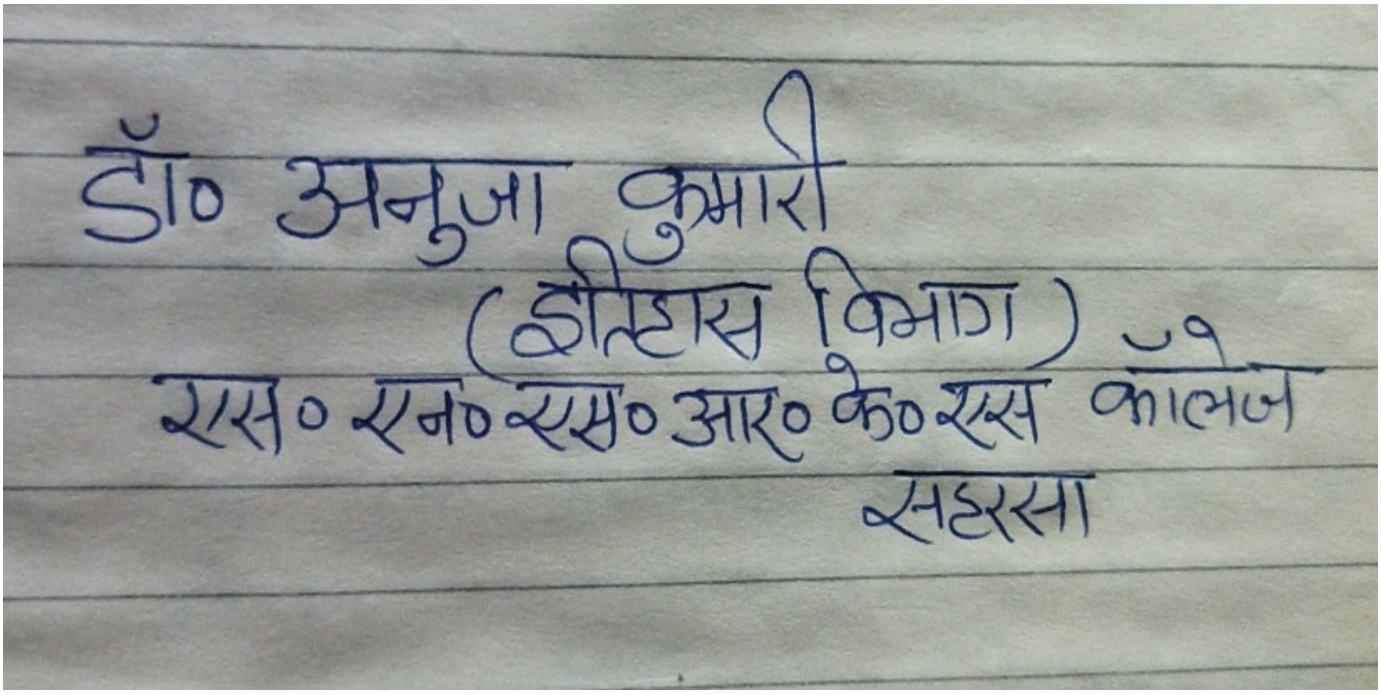

डॉ० अनुजा कुमारी
(इतिहास विभाग)
एस० एन० एस० आर० के० एस कॉलेज
सहरसा

Scanned by Scanner Go

जिस तरह अकबर ने कभी कहीं पर आवश्यकता पर अधिक प्रयास नही किया था उसी तरह अशोक ने अपने धर्म धार्मिक क्रिया कलापो के नगन समझाने का प्रयास किया इसके बदले मे उन्होने चरित्र आचरण की सुविधा मे ही जोर देने के लिए कही उसने अपने स्तम्भ-लेखों मे दृढ़ भक्ति एवं सत्य पर अधिक बल दिया इसक्रम मे वे क्रोध अंहकार आदि बुरी परिवृति का दमन करने का आदेश किया सबसे बडी बात तो यह है कि उनके यह उपदेश पूरे सिद्धान्तो तक सिमित नही थे। बल्कि उन्होने महात्मा बुद्ध सामाने लाने का प्रयास किया आश्रित की सेवा, बेसहारे का सहारा, भुखा का भोजन उनके मुल मंत्र थे। इसक्रम मे वे सभी सम्प्रदायो का आदर कर धार्मिक सही धार्मिक जनता की त्योह को प्रचलित किया इसके अतिरिक्त उन्होने सम्राज्यवादी निति को रोक लगाकर पशुओं का बद्ध बन्द करवा कर अंहिसा की निति को उजागर किया वस्तुत उसके इस अनुरवे धर्म की विशेषता विश्व प्रसिद्ध मे सबसे समझने वाले नही थी।

अशोक ने इस लोकी विशेषता को शुद्ध अपने धर्म को सिर्फ व्यक्तिगत एवं राजनितिक जीवन तक समित नही रखा बल्कि विश्व समुदाय को इससे प्रवाहित करने की इसक्रम मे उसने धर्म को प्रचालित करने के लिए जिस माध्यम

का साहरा लिया उसकी जानकारी हमें अशोक के सप्तम अभिलेख से प्रवाहित होती है। सप्तम अभिलेख से हमें यह जानकारी मिलती है कि उसने सबसे पहले व्यक्तिगत जीवन बौद्धधर्म के अनुरूप ढालने का प्रयास किया इस प्रयास में उन्होंने अपने जीवन को सर्व सधारण के सामने रखा अब बदली हुई परिस्थिति में अशोक ने राजकीय रसोई में मांस पकाना बन्द करवा दिया इसके बदले तीर्थ यात्रा शुरू की इस व्यक्तिगत धर्म के चलते अशोक के राज्य में सधारण जनता का झुकाव अनोखे धर्म की तरह हुआ जो इसकी लोकप्रियता का द्योतक है।

इस बदली हुई परिस्थितियों में अपने प्रशासन का भी नये धर्म की ओर मोड़ने का प्रयास किया इस प्रयास की तरह उन्होंने वहाँ एक धर्म विभाग का स्थापना की जो धर्म प्रचार के कार्य के लिए अधिकारीयों की न्युक्ति पुरुष एवं प्रदेशिक ऐसे अधिकारीयों के पद होते थे। जिसप्रकार मुगल सम्राज्य में मुक्ति अन्दोलन हुए थे। इसीप्रकार अशोक के राज्य में धर्म की स्थापना हुई थी। इतना ही नही बल्कि अशोक ने धर्म प्रचार को महा मात्रा को न्युक्ति की थे महामात्र सम्राज्य के विभिन्न भागों में भ्रमण में धर्म प्रचार के कार्य में सहायता प्रदान करते थे। वस्तुतः राजकीय सनरक्षण ने बौद्ध

Scanned by Scanner Go